टिप्पणी

15

प्रावधान एवं संचय

आप जानते हैं कि व्यवसायी अपने खाते चालू व्यापार अवधारणा के आधार पर बनाते हैं अर्थात् वह मानकर चलते हैं कि व्यवसाय अनंत काल तक चलेगा। इसलिए किसी भी वर्ष के शुद्ध लाभ के निर्धारण के लिए व्यवसायियों को न केवल वर्तमान आकस्मिकताओं को ध्यान में रखना होगा बल्कि भविष्य की आकस्मिकताओं को भी ध्यान में रखना होगा। वास्तव में प्रावधान एवं संचय ऐसे ही आयोजन हैं जो भविष्य की आवश्यकताओं से संबंधित होते हैं तथा जिनके लिए वर्तमान की आय में से एक भाग बचाकर अलग रख लिया जाता है।

उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप :

- प्रावधान का अर्थ और उसकी आवश्यकता को समझ सकेंगे;
- संचय के अर्थ एवं उसके उद्देश्यों को समझ सकेंगे;
- संचय के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कर सकेंगे और
- प्रावधान एवं संचय में अंतर को जान सकेंगे।

15.1 प्रावधान : अर्थ एवं आवश्यकता

आप जानते हैं कि हम अपने दैनिक जीवन में भविष्य की संभावित आवश्यकताओं के लिए विभिन्न व्यवस्थाएँ करते हैं। उदाहरण के लिए, माना कि आपके पिता आपको उच्च शिक्षा दिलाना चाहते हैं जैसे कि इंजिनियरिंग, डाक्टोरेट अथवा अन्य कोई पेशागत पाठ्यक्रम, इसके लिए उन्हें काफी धन की आवश्यकता होगी। अब प्रश्न पैदा होता है कि आपके पिता इतनी राशि की व्यवस्था कैसे करेंगे। हाँ, आपका सोचना सही है, वह आज से ही बचत करना प्रारम्भ करेंगे तथा प्रत्येक वर्ष वह यही करेंगे। जो घटनाएं भविष्य में घटित हो सकती हैं,

टिप्पणी

उनकी योजना उपलब्ध संसाधनों से वर्तमान में ही बना ली जाती है। इसी प्रकार व्यवसाय में भी यही किया जाता है। जब भी निश्चित हानि अथवा व्यय की संभावना होती है, तो उनके लिए व्यवस्था वर्तमान वर्ष के लाभ/अधिक्य में से अग्रिम रूप से कर ली जाती है। सम्भावित हानि/व्यय के लिए जो राशि अलग से रख ली जाती है, उसे प्रावधान कहते हैं।

यदि किसी राशि का भविष्य में भुगतान किया जाना है तथा यह राशि निश्चित है तो यह देयता है। उदाहरण के लिए अक्टूबर माह का ₹ 2,000 किराए का भुगतान 31 अक्टूबर को किया जाता है तथा उसका भुगतान अभी तक नहीं किया गया है तो उपक्रम, किराया खाता को नाम तथा अदत्त किराया खाता को जमा करेगा क्योंकि यह एक निश्चित देयता है। लेकिन यदि देनदारी अथवा संभावित हानि की राशि निश्चित नहीं हैं तो लाभ–हानि खाते के नाम में लिखकर एक अनुमानित राशि को अलग से रख लिया जाएगा। इस अलग रखी गई राशि को प्रावधान कहेंगे। इस प्रकार से प्रावधान का अर्थ है भविष्य में अनिश्चित हानि/व्यय के भुगतान के लिए अनुमानित राशि। प्रावधान के कुछ उदाहरण हैं : देनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान, देनदारों पर बट्टा राशि के लिए प्रावधान, ह्रास के लिए प्रावधान।

प्रावधान की आवश्यकता

प्रावधान निम्न के लिए किए जाते हैं :

i. ह्रास, सम्पत्तियों के मूल्य का पुनर्मूल्यांकन अथवा कटौती।
ii. एक ज्ञात देयता जिसकी राशि का सटीक निर्धारण करना संभव नहीं है।
iii. विवादित दावा
iv. सम्पत्ति की वसूली अथवा करों के भुगतान पर विशिष्ट हानि
v. देयता का भुगतान
vi. अप्राप्य ऋणों/संदिग्ध ऋणों का अपलेखन
vii. आकस्मिक देयताएँ

प्रावधान के लिए सामान्य नियम :

i. इसका सृजन लाभ हानि खाते के नाम में प्रविष्टि करके किया जाता है।
ii. इसका सृजन ज्ञात देयता अथवा निश्चित आकस्मिक व्यय के लिए किया जाता है, जैसे कि अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान एवं ह्रास के लिए प्रावधान आदि।
iii. व्यवसाय में लाभ हो अथवा हानि, प्रावधान की व्यवस्था करनी ही होती है।
iv. यह अंशधारकों में लाभांश वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होता है।
v. प्रावधान एक निश्चित राशि का किया जाता है, इसलिए ज्ञात आकस्मिकता के लिए प्रतिवर्ष एक निश्चित राशि एक ओर रख दी जाती है।
vi. ज्ञात देयता एवं आकस्मिकता के लिए प्रावधान करना अनिवार्य है।
vii. प्रावधान को सामान्यतः स्थिति विवरण की देयता की ओर दिखाया जाता है।

पाठगत प्रश्न 15.1

उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

i. प्रावधान का अर्थ है अनुमानित राशि जो भविष्य के लिए एक अनिश्चित _____ अथवा भविष्य में _____ के भुगतान के लिए होती है।

ii. प्रावधान _____ दावे के लिए व्यवस्था होती है।

iii. प्रावधान का सृजन _____ के नाम में लिखकर किया जाता है।

iv. प्रावधान की राशि _____ को लाभांश वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होती है।

v. प्रावधान को सामान्यतः स्थिति विवरण के _____ पक्ष में दर्शाया जाता है।

15.2 संचय का अर्थ

हमारा भविष्य अनिश्चित है। भविष्य में बहुत सी आकस्मिकताएँ एवं विभिन्न आवश्यकताएं होती हैं। कभी–कभी हम कुछ सम्भावित हानियों/व्ययों का अनुमान लगाते हैं, जिनको हमने भविष्य में वहन करना है। इसके लिए हम अपनी वर्तमान आय में से कुछ धन बचा लेते हैं। यदि सम्भावित घटना घटित होती है तो हम इस बचाई गई राशि का उपयोग कर सकते हैं। माना आपके पिता ₹ 20,000 मासिक कमाते हैं तथा वह किसी अप्रत्याशित घटना के लिए कुछ धन बचाकर नहीं रखते हैं। माना कि महीने के मध्य में आप बीमार हो जाते हैं तो आपके पिता आपके इलाज के विभिन्न खर्चों की किस प्रकार से व्यवस्था करेंगे? निश्चित है कि वह अपने मित्रों, सगे संबंधियों आदि से पैसा मांगेगे। यदि वे आपके पिता की सहायता नहीं करते हैं तो क्या होगा?

यदि आपके पिता ने इस प्रकार की अप्रत्याशित घटनाओं के लिए कुछ धन बचाया होता तो उन्हें इस प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। इस प्रकार से जो राशि हम अपनी वर्तमान आय में से भविष्य की असंभावित घटनाओं का भुगतान करने के लिए एक ओर बचाकर रखते हैं, संचय कहलाता है।

भविष्य अनिश्चित हैं, व्यवसाय में कई ऐसी घटनाएं हैं जो घटित हो सकती हैं जिनकी पहले से कोई संभावना नहीं थी। इसके लिए योजनाबद्ध तरीके से धन की व्यवस्था करना आवश्यक होता है। वर्ष में कुल अर्जित आय में से कुछ राशि को संचय के रूप में अलग रखने की आवश्यकता होती है।

संचय वह राशि है जिसे लाभ में से बचा कर एक ओर रख दिया जाता है। यह लाभ अथवा संचित का विनियोजन होता है जो व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए होता है। यह लाभों के विरूद्ध कोई अधिभार नहीं है। यह किसी देनदारी अथवा सम्पत्ति पर ह्रास को पूरा करने के लिए नहीं होता। संचय के उदाहरण हैं : सामान्य संचय, विस्तार के लिए संचय, लाभांश समानीकरण के लिए संचय, प्रतिस्थापन की लागत में वृद्धि के लिए संचय आदि।

टिप्पणी

15.3 संचय के प्रकार

कभी–कभी व्यवसाय को, भविष्य की ज्ञात अथवा अज्ञात आकस्मिकताओं/आपात स्थितियों की सम्भाव्यता का अनुमान लगाना होता है। इसके भुगतान के लिए, वह लाभों एवं अन्य आधिक्यों के एक भाग को बचाकर रख लेता है, जिसे संचय कहते हैं। संचय लाभ का विनियोजन होता है न कि लाभ पर अधिभार क्योंकि यह किसी ज्ञात देयता के भुगतान करने अथवा सम्पत्ति के मूल्य में आए ह्रास को पूरा करने के लिए नहीं होता है। यह लाभ का वह भाग है जिसे एक ओर बचाकर रख लिया जाता है, जिससे अप्रत्याशित देनदारी अथवा भविष्य की आपातकालीन स्थिति से निपटा जा सके। इसका सृजन लाभ–हानि विनियोजन खाते के नाम में प्रविष्टि करके किया जाता है। इसका सृजन उसी स्थिति में हो सकता है जबकि व्यवसाय को लाभ हो रहा हो। इसे सामान्यतः स्थिति विवरण के देयता पक्ष में दर्शाया जाता है। संचय निम्नलिखित वर्गों में बांटे जा सकते हैं :

(i) सामान्य संचय (ii) पूंजीगत संचय (iii) गुप्त संचय (iv) आयगत संचय
(v) विशिष्ट संचय (vi) संचित कोष (vii) ऋण शोधन संचय कोष/संचित कोष

i) **सामान्य संचय :** जैसा कि नाम से स्पष्ट है, सामान्य संचय किसी विशिष्ट उद्देश्य से जुड़ा नहीं होता। इसका उपयोग भविष्य की किसी भी आकस्मिकता अथवा अज्ञात देनदारी के लिए किया जा सकता है। सामान्य संचय का सृजन कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं होता। इसका सृजन केवल उस स्थिति में किया जाता हैं जबकि पर्याप्त लाभ हो। इसे लाभ–हानि विनियोजन खाते के नाम पक्ष में दर्शाया जाता है। इसकी विशेषताएं निम्न हैं :

- इसका सृजन किसी उद्देश्य विशेष के लिए नहीं किया जाता बल्कि भविष्य की आकस्मिकताओं के लिए किया जाता है।
- इसका उपयोग भविष्य की किसी भी हानि की पूर्ति के लिए किया जा सकता है।
- इसका सृजन केवल उस स्थिति में किया जाता है, जब व्यवसाय के पास पर्याप्त लाभ हों।
- इसका सृजन लाभ होने की स्थिति में ही किया जाता है अर्थात् यह लाभ पर निर्भर करता है।
- इसको लाभ हानि विनियोजन खाते के नाम में दर्शाया जाता है।
- इसके कारण केवल वितरणीय लाभ में ही कमी होती है।

इस संचय का सृजन आयगत लाभ को अलग रखकर किया जाता है। इसका उद्देश्य व्यवसाय की सामान्य वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करना होता है। यह किसी उद्देश्य विशेष के लिए नहीं होता। यह उन्मुक्त संचय है। यह भविष्य की सभी अदृश्य आकस्मिकताओं के विरूद्ध सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है। यह लाभांश के वितरण के लिए तुरंत उपलब्ध रहता है।

टिप्पणी

सामान्य संचय संगृहित लाभ होते हैं। यह आधिक्य का भाग होते हैं। यह लाभ में से बचाकर रखी राशि होते हैं। यदि लाभ नहीं हैं तो संचय भी नहीं होंगे। संचय अवितरित लाभ होते हैं। यह लाभों का विनियोजन हैं। प्रावधान लाभपूर्व होते हैं, जबकि संचय लाभोत्तर होते हैं, लाभों को ज्ञात किए बिना कोई व्यक्ति संचय के बारे में बात नहीं कर सकता। संचय सृजन, एक अच्छी व्यावसायिक नीति मानी जाती है। संचय, व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सृदृढ़ करते हैं। संचयों का सृजन विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है। यह व्यवसाय विस्तार के लिए हो सकते हैं, यह लाभांश समानीकरण के लिए हो सकते हैं अथवा ऋण पत्रों या ऋणों के भुगतान के लिए हो सकते हैं। संचय का सृजन, आयगत लाभों अथवा पूंजीगत लाभों में से किया जा सकता है। पूंजीगत लाभों में से जिन संचयों का सृजन किया जाता है, वह पूंजीगत संचय कहलाते हैं तथा अन्यों को आयगत संचय कहते हैं।

ii) **पूँजीगत संचय :** पूँजीगत संचयों का सृजन सामान्यतः पूँजीगत प्रकृति के लाभों में से किया जाता है। जैसे कि पूँजीगत लाभ, अंश एवं ऋणपत्रों के निर्गमन पर प्रीमियम, समामेलन पूर्व लाभ, सम्पत्तियों एवं देयताओं के पुनर्मूल्यांकन से लाभ। इसका अंशधारकों में लाभांश के रूप में वितरण नहीं किया जाना चाहिए। यह व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने, पूँजीगत हानियों अथवा असामान्य प्रकृति की हानियों को अपलिखित करने के लिए प्रयुक्त होता है। इस प्रकार से पूँजीगत संचय :

- लाभों का विनियोजन होता है। जिसको रोकड़ लाभांश के रूप में वितरण नहीं किया जा सकता।
- इसकी उत्पत्ति मुख्य रूप से (i) उद्यम एवं इसके अंशधरकों के बीच समता लेनदेनों से; (ii) व्यावसायिक सम्मिश्रण के लेखांकन समायोजनों से; (iii) विदेशी मुद्रा परिचालन लेनदेनों में अन्तर से; (iv) सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन से उत्पन्न आधिक्य से; (v) ऐसा गैर वसूल लाभ जिसको आय में सम्मिलित नहीं किया जाता है।
- पूँजीगत संचयों के उदाहरण हैं : प्रतिभूति प्रीमियम, पूँजी शोधन संचय, व्यवसाय के विलय एवं अधिग्रहण से उत्पन्न पूँजीगत संचय, वैधानिक संचय, सम्पत्ति का पुनः मूल्यांकन संचय एवं विनिमय उतार–चढ़ाव संचय।

पूँजीगत संचय का सृजन पूँजीगत लाभों में से किया जाता है। पूँजीगत लाभ नियमित व्यावसायिक लाभ नहीं होते। यह उन लेनदेनों से उत्पन्न लाभ होते हैं, जो अनावर्ती होते हैं। पूँजीगत संचय, सामान्यतः लाभांश वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होते हैं। इनको व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सृदृढ़ करने अथवा पूँजीगत हानियों की पूर्ति करने के लिए अलग से रखा जाता है।

पूँजीगत लाभों के उदाहरण निम्न हैं:

क) स्थाई सम्पत्तियों के विक्रय से लाभ

टिप्पणी

ख) समामेलन पूर्व लाभ

ग) ऋणपत्रों के शोधन से लाभ

घ) अंशों अथवा ऋणपत्रों के निर्गमन पर प्रीमियम

ङ) अंशों की जब्ती पर लाभ

च) व्यवसाय के अधिग्रहण पर लाभ

छ) लाभ जो व्यवसाय की नियमित क्रियाओं से अर्जित नहीं किए गए हैं।

पूँजीगत संचय का उपयोग निम्न प्रकार से किया जा सकता है :

क) बोनस अंशों का निर्गमन

ख) ख्याति का अपलेखन

ग) प्रारम्भिक व्ययों का अपलेखन

घ) अंशों/ऋणपत्रों के निर्गमन पर व्ययों का अपलेखन

ङ) समामेलन पूर्व की हानियों का अपलेखन

iii) गुप्त संचय : कभी–कभी फर्म ऐसे संचय का सृजन करती है जिसको तुलनपत्र में नहीं दिखाया जाता। इसे गुप्त संचय अथवा छिपा संचय अथवा आन्तरिक संचय कहते हैं। यह संचय वित्तीय विवरणों में नहीं दिखाया जाता। यह व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करता है, आत्मविश्वास एवं स्थिरता को बढ़ाता है। इसका सृजन बैंक, बीमा एवं वित्तीय कम्पनियों को छोड़कर अन्य संयुक्त पूँजी कम्पनियां नहीं करती।

iv) आयगत संचय : यह संचय आयगत लाभ के उस भाग से लिए जाते हैं, जिनको नकद लाभांश के रूप में वितरित किया जा सकता है, यद्यपि इसके कुछ भाग को किन्हीं अन्य उद्देश्यों के लिए अलग से रखा जा सकता है।

v) विशिष्ट संचय : जैसा कि नाम से स्पष्ट है, विशिष्ट संचय का सृजन विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है। इसका उपयोग केवल उसी उद्देश्य के लिए किया जाता है, जिसके लिए उसका सृजन किया गया है, अन्य किसी उद्देश्य के लिए नहीं। फर्म को लाभ हो अथवा हानि, विशिष्ट संचयों का सृजन करना कानूनी रूप से अनिवार्य है। इसकी प्रविष्टि लाभ–हानि खाते के नाम में की जाती है। इस प्रकार के संचय के उदाहरण हैं : लाभांश समतोलन संचय, निवेश उतार–चढ़ाव संचय, संयंत्र प्रतिस्थापन संचय एवं ऋण पत्रों के शोधन के लिए संचय। इस प्रकार से इसकी विशेषताएं हैं :

क) इसका सृजन विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है।

ख) इसका उपयोग केवल उसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है, जिसके लिए इसका सृजन किया गया है।

ग) चाहे लाभ हो अथवा न हो, इसका सृजन अनिवार्य है।

टिप्पणी

घ) सही लाभ निर्धारण के लिए इसका सृजन आवश्यक है।

ङ) इसे लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाता है।

च) इसके कारण शुद्ध लाभ घट जाते हैं।

इसका सृजन भी आयगत लाभों को अलग रखकर किया जाता है। लेकिन यह विशिष्ट उद्देश्य के लिए ही होता है। यह तुरन्त वितरण के लिए उपब्ध नहीं होता। उदाहरण के लिए ऋण पत्रों के शोधन के लिए सृजन किया गया संचय। देयता अवधि में यह संचय वितरण हेतु उपलब्ध नहीं होता। ऋण पत्रों के शोधन के पश्चात् यह सामान्य संचय बन जाता है। इसी प्रकार से लाभांश समानीकरण के लिए भी संचय का सृजन किया जा सकता है।

vi) **संचय कोष :** जब लाभ के एक भाग को अलग रख दिया जाता है तथा व्यवसाय में इसका उपयोग किया जाता है तो यह संचय होता है। लेकिन लाभ एवं अधिशेष के भाग को अलग कर व्यवसाय से बाहर उसका निवेश कर दिया जाता हैं तो इसे संचय कोष कहते हैं। इस स्थिति में **रोकी गई** राशि का सुरक्षित प्रतिभूतियों में निवेश कर दिया जाता है, जिनको तुरन्त एवं सरलता से विक्रय किया जा सके। निवेश, निश्चित अवधि के लिए नहीं किए जाते। इसका उद्देश्य व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति को सृदृढ़ करना होता है। अतः 'कोष' शब्द, संचय के व्यवसाय के बाहर किए गए निवेश को दर्शाता है। संचय कोषों का निवेश निश्चित अवधि के लिए नहीं किया जाता। इसका सृजन सदा आवंटन योग्य लाभों में से किया जाता है। संचय कोष के निवेश से प्राप्त ब्याज का पुनः विनियोग करना आवश्यक नहीं है।

वह लाभ जिसे अलग से रख लिया जाता है तथा व्यवसाय में उपयोग कर लिया जाता है, संचय कहलाता है। लेकिन लाभ के भाग को एक ओर रख लिया जाए और उसका निवेश व्यवसाय के बाहर कर दिया जाए तो इसे संचय कोष कहते हैं।

क) निवेश निश्चित अवधि के लिए नहीं होते हैं।

ख) इसका सृजन सदा आवंटन योग्य लाभों में से किया जाता है।

ग) संचयकोष के निवेश पर प्राप्त ब्याज का पुनः निवेश करना आवश्यक नहीं हैं।

vii) **ऋणशोधन संचय कोष/संचित कोष :** संचित कोष की स्थापना, दीर्घ अवधि ऋण अथवा देयताओं के शोधन अथवा सम्पत्तियों के प्रति स्थापन अथवा पट्टाधिकार के नवीनीकरण के लिए की जाती है। संचित कोष का निर्माण वार्षिक योगदान द्वारा किया जाता है। इस योगदान राशि का व्यवसाय के बाहर, सरलता से बिक्री योग्य प्रतिभूतियों में निवेश किया जाता है। निवेश पर प्राप्त ब्याज को पुनः उन्हीं प्रतिभूतियों में विनियोग कर दिया जाता है। अतः संचित कोष हो सकता है : (i) स्थाई सम्पत्तियों की प्रति स्थापना के लिए अथवा (ii) ऋणपत्रों के शोधन अथवा ऋण के पुनर्भुगतान के लिए।

टिप्पणी

स्थाई सम्पत्तियों की प्रति स्थापना के लिए संचित कोष एक प्रावधान होता है। लेकिन ऋणपत्रों के शोधन अथवा ऋण की वापसी के लिए संचित कोष, लाभ का विनियोजन नहीं होता है। कम्पनी को संचितकोष के सृजन की आवश्यकता नहीं होती।

संचय, लाभ के विनियोजन होते हैं अर्थात् जिनमें प्रावधान एवं अन्य व्यय सम्मिलित हैं, के घटा देने पर लाभों का निर्धारण किया गया हो। संचय, अवशिष्ट आय होते हैं, जो सभी व्ययों एवं कराधान आदि के पश्चात बचे रहते हैं तथा इनपर स्वामियों अर्थात् अंशधारकों का अधिकार होता है।

क) संचित कोष निवेश, एक निश्चित अवधि के लिए होता है।

ख) यह सदा आवंटन के लिए लाभ में से नहीं होता, उदाहरण के लिए सम्पत्ति के प्रति स्थापना के लिए संचित कोष, ह्रास के लिए प्रावधान होता है। इसका सृजन लाभ के न होने पर भी अनिवार्य रूप से किया जाता है।

ग) संचित कोष के ब्याज को सदैव पुनः निवेश किया जाता है।

संचित कोष, वार्षिक योगदानों द्वारा निर्मित होता है। योगदानों को व्यवसाय के बाहर सरलता से बिक्री योग्य प्रतिभूतियों में निवेश कर दिया जाता है। विनियोजित राशि पर प्राप्त ब्याज को उन्हीं प्रतिभूतियों में पुनः निवेशित कर दिया जाता है।

एक संचित कोष (i) स्थाई सम्पत्तियों की प्रति स्थापना के लिए (ii) ऋणपत्रों के शोधन एवं ऋण को चुकता करने के लिए होता है। स्थाई सम्पत्ति की प्रतिस्थापना के लिए संचित कोष एक प्रावधान है। लेकिन ऋणपत्रों के शोधन एवं ऋण के चुकता करने के लिए संचित कोष लाभों का विनियोजन है। संचित कोष यह दर्शाता है कि राशि का व्यवसाय से बाहर निवेश किया गया है।

संचय सृजन के सामान्य नियम

i. इसका सृजन लाभ हानि विनियोजन खाते के नाम में प्रविष्टि करके किया जाता है।

ii. इसका सृजन अज्ञात देयता के भुगतान के लिए किया जाता है या फिर कम्पनी की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए या फिर लाभांश के समानीकरण के लिए।

iii. संचय का सृजन व्यवसाय में लाभ होने की स्थिति में होता है।

iv. इसका वितरण अंश धारकों में लाभांश के रूप में किया जा सकता है।

v. वास्तविक राशि की आवश्यकता को ध्यान में रखे बिना ही संचय का सृजन किया जाता है। केवल ऋणपत्रों के शोधन हेतु संचय सृजन के लिए एक निश्चित धनराशि एक ओर रख दी जाती है।

vi. संचय का सृजन व्यवसाय की वित्तीय नीति एवं प्रबन्ध निर्णयन पर निर्भर करता है।

vii सामान्यतः यह तुलन पत्र के दायित्व पक्ष में दर्शाया जाता है, क्योंकि यह एक विशिष्ट संचय नहीं है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 15.2

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

i. वर्तमान आय में से जो राशि भविष्य की अप्रत्याशित घटना के भुगतान के लिए एक ओर रखी जाती है _____ कहलाती है।

ii. _____ का सृजन कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं है।

iii. _____ संचय का सृजन _____ लाभ से किया जाता है।

iv. स्थाई सम्पत्तियों की बिक्री से लाभ _____ लाभ होता है।

v. _____ संचय को वित्तीय विवरण में नहीं दिखाया जाता।

vi. एक ओर बचाकर रखे लाभ तथा उसके व्यवसाय में प्रयोग को _____ कहते हैं।

vii. एक ओर बचाकर रखे लाभ तथा उसके व्यवसाय के बाहर निवेश को _____ कहते हैं।

viii. संचित कोष निवेश _____ अवधि के लिए होते हैं।

15.4 प्रावधान एवं संचय में अन्तर

क्र.सं.	*प्रावधान*	*संचय*
1.	इसका सृजन लाभ–हानि खाते के नाम में लिखकर किया जाता है।	इसका सृजन लाभ–हानि विनियोजन खाते के नाम में लिखकर किया जाता है।
2.	यह लाभ पर प्रभार होता है, जिसके बिना व्यवसाय का सही लाभ अथवा हानि ज्ञात नहीं किया जा सकता।	यह लाभ का विनियोजन है तथा इसका सृजन सही लाभ या हानि के निर्धारण के लिए नहीं किया जाता।
3.	व्यवसाय को लाभ हो अथवा हानि, इसके लिए व्यवस्था की जाती है।	इसका सृजन केवल तभी किया जाता है जब व्यवसाय में लाभ हो।
4.	यह अंशधारकों में लाभांशवितरण के लिए उपलब्ध नहीं होता है।	इसको अंशधारकों में लाभांश के रूप में वितरित किया जा सकता है।
5.	यह ज्ञातदेयता अथवा निश्चित आकस्मिकता के लिए राशि है जैसे कि अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान या फिर ह्रास के लिए प्रावधान।	यह राशि, भविष्य की अज्ञात देनदारी के भुगतान अथवा व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने अथवा लाभांश के समानीकरण के लिए होती है।

टिप्पणी

6.	प्रावधान करना, प्रबन्ध के लिए एक कानूनी अनिवार्यता है।	संचय का सृजन कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं है। यह व्यवसाय की वित्तीय नीति एवं प्रबंध के निर्णयन पर निर्भर करता है।
7.	प्रावधान को देयता की ओर अथवा ऋणात्मक सम्पत्ति के रूप में संपत्तियों की ओर लिखा जा सकता है।	संचय स्वामी की समता से संबंधित होते हैं। इसे तुलनपत्र के देयता पक्ष में दर्शाया जाता है क्योंकि यह विशिष्ट संचय नहीं है।

पाठगत प्रश्न 15.3

I. निम्नलिखित कथन सत्य हैं अथवा असत्य :

i. प्रावधान सभी संभावित हानियों के लिए लाभ पर अधिभार होते हैं।

ii. सभी संचय तुलनपत्र के देयता पक्ष में होते हैं।

iii. पूँजी संचय स्वतंत्रता से लाभ के रूप में बांटे जाते हैं।

iv. संचय का उद्देश्य व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करना होता है।

v. प्रावधान एक निश्चित राशि के लिए किया जाता है, इसलिए ज्ञात आकस्मिकता के लिए प्रति वर्ष एक निश्चित राशि अलग रख दी जाती है।

II. बहुविकल्पीय प्रश्न

i. निम्न में से कौन सा प्रावधान नहीं है :

क) अप्राप्य ऋणों के लिए प्रावधान

ख) देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान

ग) लाभांश समानीकरण संचय

घ) ह्रास के लिए प्रावधन

ii. निम्न में से कौन सा संचय नहीं है :

क) विस्तार के लिए संचय ख) लाभांश के लिए संचय

ग) गुप्त संचय घ) अप्राप्य ऋणों के लिए प्रावधान

iii. निम्न में से उस संचय का नाम दें, जिसका सृजन किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए नहीं होता है, बल्कि भविष्य की आकस्मिकताओं के लिए होता है :

क) सामान्य संचय ख) पूँजीगत संचय

ग) विशिष्ट संचय घ) गुप्त संचय

iv. निम्न में से उस संचय का नाम दें जिसका बोनस अंशों के निर्गमन के लिए उपयोग किया जा सकता है :

क) सामान्य संचय　　ख) पूँजीगत संचय

ग) गुप्त संचय　　घ) संचित कोष

v. निम्न में से उस मद की पहचान करें, जिसका सृजन लाभ हानि विनियोजन खाते के नाम में लिखने से होता है

क) अप्राप्य ऋणों के लिए प्रावधान

ख) देनदारों पर बट्टों के लिए प्रावधान

ग) आयकर के लिए प्रावधान

घ) सामान्य संचय

आपने क्या सीखा

- प्रावधान एक अनुमानित राशि होती है, जो भविष्य की अनिश्चित हानि या व्यय के भुगतान के लिए होता है, जैसे कि संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान, बट्टे के लिए प्रावधान, ह्रास के लिए प्रावधान। प्रावधान लाभ में से किए जाते हैं तथा तुलनपत्र के देयता पक्ष में दिखाए जाते हैं। भविष्य की ज्ञात देयता के भुगतान के लिए प्रावधान करना अनिवार्य है।

- चालू आय में से जो राशि भविष्य की अप्रत्याशित घटना के लिए बचाकर रखी जाती है, उसे संचय कहते हैं। जैसे सामान्य संचय, विस्तार के लिए संचय, लाभांश के समानीकरण के लिए संचय आदि। सामान्य संचय अवितरित लाभ या प्रतिधारित आय है। यदि लाभ नहीं है तो संचय का सृजन नहीं किया जा सकता। संचय व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए विनियोजन होते हैं। पूँजी संचय का सृजन पूँजीगत लाभों में से किया जाता है, जैसे कि पूँजीगत लाभ, अंश एवं ऋण पत्रों के निर्गमन पर प्रीमियम, समामेलन पूर्व लाभ आदि। यह संचय लाभांश के रूप में वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होते। गुप्त संचय तुलनपत्र में नहीं दिखाए जाते। आयगत संचय, लाभों के भाग हैं, जिन्हें लाभांश के रूप में बांटा जा सकता है। विशिष्ट संचय विशिष्ट उद्देश्य के लिए बनाया जाता है। जैसे कि लाभांश समानीकरण संचय, निवेश संचय, निवेश उतार–चढ़ाव संचय आदि। जब लाभ के एक भाग को अलग रखकर व्यवसाय के बाहर निवेश कर दिया जाता है तो इसे संचय कोष कहते हैं। संचित कोष की स्थापना, दीर्घ अवधि ऋणों के शोधन या देयता या सम्पत्तियों की प्रति स्थापना के लिए की जाती है।

पाठान्त प्रश्न

1. संचित कोष का क्या अर्थ है?
2. प्रावधान का क्या अर्थ है?
3. संचय का अर्थ दीजिए।
4. प्रावधान के सृजन के उद्देश्य बताइए।
5. एक व्यवसाय संचयों का सृजन क्यों करता है? संक्षेप में समझाइए।
6. पूँजीगत संचय के उपयोग के उद्देश्य बताइए।
7. प्रावधान एवं संचय में किन्हीं चार आधारों पर अंतर कीजिए।
8. निम्न का वर्णन करें :

   i. गुप्त संचय ii. आयगत संचय

   iii. विशिष्ट संचय iv. संचित कोष

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

15.1 (i) हानि, व्यय (ii) विवादित (iii) लाभ एवं हानि खाते
(iv) स्वामी/अंशधारक (v) देयता

15.2 (i) संचय (ii) सामान्य संचय (iii) पूँजी, पूँजीगत
(iv) पूँजीगत (v) गुप्त (vi) संचय
(vii) संचय कोष (viii) निश्चित

15.3 I. (i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य
(iv) सत्य (v) सत्य

II. (i) ग (ii) घ (iii) क (iv) ख (v) घ

क्रियाकलाप

आपके अभिभावक भविष्य के ज्ञात अथवा अज्ञात व्ययों/देयता के लिए अपनी नियमित आय में से कुछ बचत करते हैं। पिछले तीन महीने की बचतों की सूची बनाएँ। उसके कारण दें तथा संचय और प्रावधान के सिद्धान्तों के आधार पर उनमें अन्तर करें, जिससे कि आपको संचय एवं प्रावधान शब्दों का स्पष्ट ज्ञान हो सके।